एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा

(सम्बद्ध बी.एन. मंडल यूनिवर्सिटी, मधेपुरा, बिहार)

****

ऑनलाइन शिक्षण

****

प्रस्तुति : डॉ रिपुंजय कुमार सिंह (हिंदी विभाग,एस. एन. एस. आर.के.एस. कॉलेज, सहरसा)

****

अध्ययन व विश्लेषण शिक्षण

Scanned by CamScanner

भाग-23

****

बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी, प्रथम वर्ष

****

प्रथम पत्र

****

तुलसीदास

****

Scanned by CamScanner

रामचरितमानस -अयोध्या काण्ड

****

[अध्ययन व विश्लेषण भाग- 22 से आगे...]

प्रसन्नतां या न गताभिषेकतस्तथा न मम्ले
वनवासदुःखतः।
मुखाम्बुज श्री रघुनंदनस्य मे सदास्तु सा
मंजुलमंगलप्रदा॥ 2॥

Scanned by CamScanner

रघुकुल को आनंद देनेवाले श्री रघुनंदन के मुखारविंद की जो शोभा राज्याभिषेक से (राज्याभिषेक की बात सुनकर) न तो प्रसन्नता को प्राप्त हुई और न वनवास के दुःख से मलिन ही हुई, वह (मुखकमल की छवि) मेरे लिए सदा सुंदर मंगलों की देनेवाली हो॥ 2॥

नीलाम्बुजश्यामलकोमलांग
सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं
रघुवंशनाथम्॥ 3॥

Scanned by CamScanner

नीले कमल के समान श्याम और कोमल जिनके अंग हैं, सीता जिनके वाम-भाग में विराजमान हैं और जिनके हाथों में (क्रमशः) अमोघ बाण और सुंदर धनुष है, उन रघुवंश के स्वामी राम को मैं नमस्कार करता हूँ॥ 3॥

(शेष अध्ययन व विश्लेषण भाग-24 में...)

Scanned by CamScanner